विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्ष: 7 | अंक: 26 | जून, 2014

विश्व हिंदी सचिवालय शासी परिषद के नए सदस्य

श्रीमती सुषमा स्वराज, विदेश मंत्री

श्रीमती स्मृति इरानी, मानव संसाधन विकास मंत्री

श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, संस्कृति मंत्री

विश्व हिंदी सचिवालय भारत सरकार व मॉरीशस सरकार की द्विपक्षीय संस्था है। विश्व हिंदी सचिवालय अधिनियम 2002 के अनुरूप भारत सरकार के विदेश मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्री व संस्कृति मंत्री सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य होते हैं। भारत में 16 मई, 2014 को घोषित लोक सभा चुनावों के परिणाम स्वरूप बनी नई सरकार व मंत्रीमंडल में श्रीमती सुषमा स्वराज, श्रीमती स्मृति इरानी व श्री श्रीपाद येस्सो नाईक क्रमश: विदेश मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्री और संस्कृति मंत्री पद पर आसीन हुए तथा सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य बने।

विश्व हिंदी सचिवालय व विश्व हिंदी समुदाय की ओर से भारत के नए प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी तथा शासी परिषद के नए सदस्यों को हार्दिक बधाई व अभिवादन।

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन

26 और 27 अप्रैल, 2014 को न्यू यॉर्क में आयोजित किया गया अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन जिसमें अमेरिका, कनाडा, कैरेबियाई देश, त्रिनिदाद और टोबैगो, मॉरीशस और भारत से पधारे हिंदी सेवी, अध्यापक, भाषाविद, लेखक और कवि द्वारा अमेरिकी महाद्वीप में हिंदी शिक्षा और प्रचार के अवसरों और चुनौतियों पर चर्चा की गई। *शेष पृ. 4*

हिंदी शिक्षण तथा सूचना संचार प्रौद्योगिकी संगोष्ठी–कार्यशाला

शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में तथा एम.जी.आई व एम.आई.ई. के सौजन्य से विश्व हिंदी सचिवालय ने 7 से 10 अप्रैल, 2014 तक प्राथमिक पाठशाला के हिंदी शिक्षकों के लिए ''हिंदी शिक्षण तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी संगोष्ठी-कार्यशाला'' का आयोजन किया जिसमें लगभग 500 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया।

शेष पृ. 2–3

श्री अभिमन्यु अनत को सम्मान

19 मई, 2014 को स्कूल ऑव इंडियन स्टडीज़, सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस ने देश के प्रसिद्ध हिंदी लेखक व साहित्यकार श्री अभिमन्यु अनत के सम्मान में एक बधाई कार्यक्रम का आयोजन किया।

शेष पृ. 6

इज़रायल में हिंदी को बढ़ावा देने को आगे आए भारतीय व्यवसायी

1 जून, 2014 को तेल अवीव विश्वविद्यालय, इज़रायल ने मनाया भव्य रूप से हिंदी दिवस। अवसर पर इज़रायल में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए भारतीय व्यवसायियों ने आर्थिक अनुदान की घोषणा की।

शेष पृ. 3

आगे पढ़ें :

- 'तकनीकी सुलझनें' का लोकार्पण — *पृ. 5*
- जेएनयू में 'हमारे समय का साहित्य' विषयक राष्ट्रीय परिसंवाद — *पृ. 8*
- 'हिंदी-थाई-अंग्रेज़ी' त्रिभाषी कोश - थाईलैंड की छात्रा द्वारा अहम शोध — *पृ. 8*
- हिंदी यू.एस.ए. ने मनाया तेरहवाँ हिंदी महोत्सव — *पृ. 7*
- हिंदी में विज्ञान के सबसे बड़े सम्मेलन का आयोजन संपन्न — *पृ. 9*
- प्रो. केदारनाथसिंह को 49वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार — *पृ. 9*
- *संपादक मंडल की ओर से दो महत्वपूर्ण सूचनाएँ* — *पृ. 12*

ISSN 1694-2485

हिंदी शिक्षण तथा सूचना संचार प्रौद्योगिकी संगोष्ठी-कार्यशाला

बाएँ से श्री बालेंदु शर्मा, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, श्री मेधा गणपत, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल, श्री विजय मधु, श्री ओमनाथ वर्मा

शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में तथा महात्मा गांधी संस्थान व मॉरीशस इंस्टीट्यूट ऑव एजुकेशन के सौजन्य से विश्व हिंदी सचिवालय ने 7 से 10 अप्रैल, 2014 तक प्राथमिक पाठशाला के हिंदी शिक्षकों के लिए ''हिंदी शिक्षण तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी संगोष्ठी-कार्यशाला'' का आयोजन किया।

संगोष्ठी-कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को हिंदी और आई.सी.टी. के नवीनतम उपकरणों और उनके उपयोग की विधियों से अवगत कराना रहा जिससे हिंदी शिक्षण के उन्नयन का मार्ग और प्रशस्त हो सके। इस कार्यशाला के दौरान लगभग 500 शिक्षकों को युनिकोड, फ़ोंट, हिंदी टंकन, इंस्क्रिप्ट, न्यू मीडिया, सोशल नेटवर्किंग साइट के उपयोग का प्रशिक्षण दिया गया।

संगोष्ठी-कार्यशाला का संचालन भारत के तकनीकविद् व आई.सी.टी. विशेषज्ञ श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच तथा विश्व हिंदी सचिवालय, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस इंस्टीट्यूट ऑव एजुकेशन व शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय के विशेषज्ञों द्वारा किया गया।

संगोष्ठी-कार्यशाला का उद्‌घाटन समारोह

संगोष्ठी-कार्यशाला का उद्‌घाटन समारोह 7 अप्रैल, 2014 को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स के भव्य सभागार में संपन्न हुआ। इस अवसर पर शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री मेधा गणपत ने अपनी उपस्थिति से समारोह की गरिमा बढ़ाई। अवसर पर भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल, महात्मा गांधी संस्थान के महानिदेशक, श्री विजय मधु, मॉरीशस इंस्टीट्यूट ऑव एजुकेशन के निदेशक श्री ओमनाथ वर्मा भी मंच पर उपस्थित थे।

अतिथि विशेषज्ञ व तकनीकविद् श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच के प्रस्तुतिकरण से ही समारोह आरम्भ किया गया।

प्रस्तुतिकरण के पश्चात् सभी महानुभावों, अतिथियों व प्रतिभागी शिक्षकों का स्वागत करते हुए कार्यवाहक महासचिव, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने सचिवालय की पिछली उपलब्धियों का ब्योरा देते हुए, इस आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री, माननीय डॉ. वसन्त कुमार बनवारी का संदेश पढ़कर सुनाया। माननीय मंत्री जी ने अपने संदेश में सचिवालय को बधाई देते हुए कहा ''मेरी बधाई आप शिक्षकों को भी जाएगी... क्योंकि आप इस ऐतिहासिक योजना के सबसे ज़रूरी खिलारी हैं... आपके ही माध्यम से हम इस देश में हिंदी शिक्षा को एक नयी ऊँचाई तक ले जा सकेंगे।'' उन्होंने यह भी कहा कि ''सचिवालय ने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपने कार्यों को फैलाने के लिए आई.सी.टी. को एक औज़ार बनाया है। इस से हम न केवल अपने देश में बल्कि दूसरे देशों में भी हिंदी व आई.सी.टी. का ज्ञान बाँट पा रहे हैं। मुझे याद है कि सचिवालय ने पिछले साल दक्षिण अफ्रीका में कार्यशाला किया था और आगे भी इस तरह की योजना बन रही है। मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि इन संस्थाओं के माध्यम से मॉरीशस विश्व भर में हिंदी शिक्षा में प्रौद्योगिकी के प्रचार का एक केंद्रीय बिंदु बनकर उभर रहा है।''

भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल ने आई.सी.टी. की उपयोगिता तथा लाभ की चर्चा करते हुए कहा कि हमारे पास सभी औज़ार हैं, उपकरण हैं, लेकिन उसका प्रयोग कैसे किया जाए उसका ज्ञान होना आवश्यक है। संगोष्ठी-कार्यशाला में छोटे से लेकर बड़े, अलग-अलग पीढ़ी के शिक्षक उपस्थित थे और उन सभी को एक साथ इकट्‌ठा कर आई.सी.टी. के उपकरणों का प्रयोग करने का प्रशिक्षण देना अपने आप में विशेष है।

महात्मा गांधी संस्थान के महानिदेशक, श्री विजय कुमार मधु ने सभागार को संबोधित करते हुए कहा कि ''सचिवालय द्वारा आयोजित यह एक ऐतिहासिक गतिविधि है जिसके आयोजन में सहयोग देना महात्मा गांधी संस्थान के लिए गर्व की बात है। महात्मा गांधी संस्थान ने हमेशा ऐसी परियोजनाओं का समर्थन किया है जो भाषा के उन्नयन के उद्देश्य से नवीन दृष्टिकोण को अपनाते हुए आगे बढ़े। इसी उद्देश्य के साथ महात्मा गांधी संस्थान का भाषा संसाधन केंद्र हिंदी, उर्दू, तमिल, तेलुगु, मराठी, मॉदर्न चीनी और संस्कृत इत्यादि भाषाओं में मल्टिमीडिया सामग्री तैयार करने की योजना बना रहा है। इस योजना में पारंपरिक अध्ययन पद्धति व अभ्यास से अलग एनिमेटेड कहानियाँ व अभ्यास कार्यों का निर्माण किया जाएगा।'' श्री मधु आगे यह भी कहते हैं कि महात्मा गांधी संस्थान कक्षाओं को डिजिटलाइज़ करने में तथा साँकोरे (Sankoré) परियोजना को आगे बढ़ाने में हमेशा तत्पर है।

मॉरीशस इंस्टीट्यूट ऑव एजुकेशन के निदेशक, श्री ओमनाथ वर्मा ने अपने उद्‌बोधन में शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय का धन्यवाद करते हुए सचिवालय की परियोजना की सराहना भी की। श्री वर्मा ने कहा ''मॉरीशस इंस्टीट्यूट ऑव एजुकेशन को संगोष्ठी-कार्यशाला में सहयोग प्रदान करने तथा साँकोरे (Sankoré) परियोजना पर इंस्टीट्यूट द्वारा प्रस्तुतिकरण का अवसर देने के लिए मंत्रालय तथा सचिवालय के प्रति आभार।''

इस अवसर पर श्री बालेन्दु शर्मा ने उपस्थित महानुभावों को अपनी

पुस्तक 'तकनीकी सुलझनें' भेंट की।

उद्‌घाटन समारोह में सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य, श्री अजामिल माताबदल; श्री मीमांसक, द्वितीय सचिव, भारतीय उच्चायोग; महात्मा गांधी संस्थान के प्राध्यापक; हिंदी प्रचारिणी सभा, हिंदी संगठन, आर्य सभा व मॉरीशस के अन्य शैक्षिक व भाषा प्रचारक संस्थाओं के प्रतिनिधि व सदस्य उपस्थित थे।

समारोह का संचालन, श्री कुमारदत्त गुदारी ने किया।

संगोष्ठी

उद्‌घाटन समारोह के समापन के साथ ही संगोष्ठी का औपचारिक उद्‌घाटन भी हुआ। संगोष्ठी विभिन्न विषयों पर आधारित रहा जिसका संचालन श्री बालेन्दु शर्मा, श्री कुमारदत्त गुदारी, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल तथा मॉरीशस इंस्टीट्यूट

ऑव एजुकेशन के प्रतिनिधि श्री अश्विन जादू व सुश्री वरुणा अनथ ने किया। संगोष्ठी के अंतर्गत प्रतिभागी शिक्षकों को हिंदी तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों व संभावनाओं से अवगत कराया गया, टैक्नो-पेडागोजी विषय के अंतर्गत यह समझाया गया कि कक्षाकों में प्रौद्योगिकी कार्यान्वयन व आई.सी.टी. आधारित शिक्षण सहायक सामग्री की तैयारी कैसे की जाए, हिंदी शिक्षण के उन्नयन हेतु उपलब्ध संसाधनों के प्रयोग के तरीके, अपने कंप्यूटर पर युनिकोड व हिंदी (प्रोग्राम, सॉफ्टवेयर, फ्रीवेर, फ़ोंट) का प्रयोग कैसे किया जाए तथा इंस्क्रिप्ट माध्यम से युनिकोड में हिंदी टंकन कैसे किया जाए, इस पर विस्तार दिया गया। हिंदी टंकन के लिए श्री बालेन्दु शर्मा ने विशेष रूप से संगोष्ठी-कार्यशाला के लिए ''वर्चुअल हिंदी टाइपराइटर'' सॉफ्टवेयर का निर्माण किया। यह सॉफ्टवेयर प्रतिभागियों के साथ नि:शुल्क बाँटा गया।

कार्यशाला (9–10 अप्रैल, 2014)

कार्यशाला का संचालन करते हुए श्री बालेंदु शर्मा

9 से 10 अप्रैल, 2014 को कार्यशाला का आयोजन महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यम् भारती सभागार तथा अन्य पांच कक्षाओं में हुआ। कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों को संगोष्ठी के अंतर्गत चर्चित विषयों पर अभ्यास करवाया गया। प्रतिभागियों ने कार्यशाला में वर्चुअल हिंदी सामग्रियों का निर्माण भी किया।

तत्पश्चात् संस्थान में इंटरैक्टीव प्रोजेक्टर युक्त कुछ कक्षाओं में शिक्षकों को इंटरैक्टीव प्रोजेक्टर के प्रयोग का तकनीक सिखाया गया साथ ही इसपर अभ्यास भी करवाया गया।

कार्यशाला (11 अप्रैल, 2014)

कार्यशाला में भाग लेने वाले हिंदी शिक्षक

कार्यशाला की सफलता व गुणवत्ता को देखते हुए मॉरीशस के निरीक्षकों ने सचिवालय से ऐसी ही कार्यशाला के आयोजन का अनुरोध किया। चूँकि ये निरीक्षक ही अध्यापकों का मार्गदर्शन करते हैं, उनके लिए कार्यशाला में अध्यापकों को दी गई जानकारियाँ व प्रशिक्षण का ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य व समीचीन हो जाता है। 11 अप्रैल, 2014 को महात्मा गांधी संस्थान में हिंदी निरीक्षकों के लिए हिंदी तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का संचालन उपरोक्त विशेषज्ञों ने ही किया।

उद्घाटन समारोह में उपस्थित गणमान्य अतिथि व प्रतिभागी हिंदी शिक्षक

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

तेल अवीव में हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी को बढ़ावा देने को आगे आए भारतीय व्यवसायी

हिंदी दिवस समारोह में उपस्थित गणमान्य अतिथि

1 जून, 2014 को तेल अवीव विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस समारोह भव्य रूप से मनाया गया। पिछले वर्षों की तरह अब भी हिंदी का यह उत्सव प्रभावशाली और उत्साहप्रद रहा। उसमें सैकड़ों हिंदी प्रेमियों ने भाग लिया।

समारोह का कार्यक्रम विधिपूर्वक हिंदी सीख रहे विद्यार्थियों के तमाशों पर आधारित रहा। उन्होंने कुछ नाटकों समेत 'शकुंतला' का भी मंचन किया, बॉलिवुड के गीत और फ़िल्म 'मिर्च-मसाला' के कई दृश्यों का अभिनय भी किया। इसके अलावा हिंदी की कवयित्री बल्ली सिंगा ने अपनी कविताएँ सुनाईं और वाद्यकारों ने शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत किया।

इस वर्ष हिंदी समारोह की महत्ता पिछले बरसों की तुलना में कुछ अलग थी। इसका कारण यह था कि भारतीय मेहमान बड़ी संख्या में आए। हिंदी दिवस में भारत के राजदूत महामहिम श्री जयदीप सरकार के साथ भारतियों का एक विपुल प्रतिनिधिमंडल आया जिसमें राजदूतावास के अन्य अधिकारी, संयुक्त राष्ट्र संघ के सैनिक बलों के कई वरिष्ठ कमान्डर, कारोबारी और इज़रायल में पढ़ रहे अनेक भारतीय विद्यार्थी भी थे।

राजदूत जयदीप सरकार ने हिंदी के बढ़ते हुए महत्व पर ज़ोर देते हुए कहा कि आजकल विदेशी कम्पनियां भी भारत में अपने माल का विज्ञापन हिंदी में प्रकाशित करने लगीं क्योंकि हिंदी बोलनेवाले करोड़ों भारतीयों के दिल तक पहुंचने का यह सीधा रास्ता है और भारत में कार्यरत इज़रायली कम्पनियां भी हिंदी जाननेवालों का लाभ उठा सकती हैं।

तेल अवीव, इज़रायल में हिंदी को बढ़ावा देने की दिशा में भारतीय व्यापारियों ने कदम बढ़ाया है। उन्होंने हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर ही हिंदी सीख रहे छात्रों के लिए 33 हज़ार डॉलर (करीब 20 लाख रुपये) के अनुदान की घोषणा की।

इस अनुदान से विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा सीख रहे छात्रों को आगामी पाँच सालों के दौरान सहायता मिलेगी। वे भारत जाकर हिंदी भाषा को बेहतर तरीके से सीख सकेंगे। इसके लिए छात्रों का चयन लोकप्रिय टेलीविज़न शो 'कौन बनेगा करोड़पति' की तर्ज पर 'कौन भारत जाएगा' के माध्यम से किया जाएगा। यह अनुदान भारतीय हीरा विनियम व्यापारियों द्वारा दिया जाएगा। भारतीय हीरा समुदाय के प्रमुख रंजीत बरमेजा ने कहा कि यह हमारे लिए गर्व की बात है कि इज़रायल में बहुत लोग हमारी राष्ट्र भाषा सीख रहे हैं। भारतीय संस्कृति के प्रति इस तरह का उत्साह देखना खुशी की बात है। उन्होंने कहा कि इज़रायल में उभरते हुए भारत को बढ़ावा देने का यह एक प्रयास है।

आभार: प्रो. गेनादी श्लोम्पेर तथा जागरण डॉटकॉम

अमेरिका में हिंदी प्रचार का नया अध्याय

26 और 27 अप्रैल, 2014 को न्यू यॉर्क में कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स और साइंस भवन के सिल्वर हॉल में अमेरिका, कनाडा, कैरेबियाई देश त्रिनिदाद और टोबैगो, मॉरीशस और भारत से पधारे सैकड़ों हिंदी सेवी अध्यापक, भाषाविद, लेखक और कवि अमेरिकी महाद्वीप में हिंदी शिक्षा और प्रचार के अवसरों और चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए आयोजित अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन में शामिल हुए।

अमेरिका में भारत के राजदूत डॉ. सुब्रमण्यम जयशंकर ने वीडियो संदेश के माध्यम से सम्मेलन का उद्घाटन किया। न्यू यॉर्क में भारत के प्रधान कौंसुल ज्ञानेश्वर मुले ने अपने संबोधन में हिंदी को भारत की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बताते हुए हिंदी प्रचार को अभियान का स्वरूप देने पर ज़ोर दिया। सम्मेलन के शैक्षिक सत्रों का प्रारंभ यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेनसिलवेनिया के पूर्व हिंदी अध्यापक डॉ. सुरेन्द्र गंभीर के वक्तव्य से हुआ जिसमें उन्होंने अमेरिका में हिंदी के वर्तमान स्वरूप की चर्चा की। उन्होंने व्हाईट हाउस द्वारा सन् 2006 में जारी उस अध्यादेश की चर्चा की जिसके अंतर्गत हिंदी उन सात प्रमुख विदेशी भाषाओं की श्रेणी में शामिल हो गयी जिनके अध्यापन के लिए सरकारी अनुदान दिया जाता है। अमेरिकी सरकार की एजेंसियों ने अपने शोध के विषयों में हिंदी को शामिल किया और स्टार टॉक नामक कार्यक्रम का जन्म हुआ जिसके तहत प्रति वर्ष अमेरिका में लगभग एक दर्जन स्थानों पर हिंदी शिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं। लेकिन गंभीर ने भारतीय समाज में हिंदी की उपेक्षा पर गहरा क्षोभ व्यक्त करते हुए चीनी और अरबी भाषाओं के लिए किए जा रहे प्रयासों पर नज़र डालते हुए कहा कि इन दोनों भाषाओं को अमेरिकी शिक्षा प्रणाली में शामिल करने के लिए चीन और कतार की सरकारी एजेंसियों और स्वयंसेवी संस्थाएँ महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। आंकड़े बताते हैं कि भारतीय मूल के माता-पिता अपने बच्चों को हिंदी सिखाने के प्रति उदासीन हैं। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि अमेरिका में हिंदी शिक्षार्थियों की संख्या दिन ब दिन कम होती जा रही है। गंभीर ने अमेरिका में बसे भारतीय समाज को चेतावनी देते हुए कहा कि 'हालाँकि अमेरिकी सरकार द्वारा हिंदी को बढ़ावा देने के सार्थक प्रयासों के कारण आज हिंदी प्रयास के स्वर्णिम अवसर मौजूद हैं, लेकिन यदि हिंदी के प्रति हमारी उदासीनता बरकरार रही तो वह दिन दूर नहीं जब हिंदी इस देश में वैसे ही मुरझा जाएगी जैसे कैरिबियन देशों में मुरझा गयी।'

दरअसल, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन भारतीय समाज के उन सभी तबकों को एक साथ लाने का प्रयास था जो किसी प्रकार से हिंदी से जुड़े हैं। एक तरफ़ तो भाषाविद और लेखक - कवि हैं तो दूसरी तरफ़ भारतीय मूल के व्यवसायी हैं जिन्हें यह समझाने की कोशिश की गयी कि हिंदी सिर्फ वार्तालाप का माध्यम ही नहीं, यह भारतीयता की पहचान है। भारत से बाहर जहाँ कहीं भी भारतीय मूल के लोग जीवन यापन कर रहे हैं उन सबको एक सूत्र में पिरोने का सामर्थ्य हिंदी में है जिसका उचित प्रयोग होना चाहिए। जैसा कि कौन्सुलाधीश मुले ने समस्त श्रोताओं से कहा : आप उन व्यवसायों का समर्थन करें, जो हिंदी में कारोबार करने के लिए राज़ी हैं। उन रेस्तरां या होटलों में जाएँ जहाँ हिंदी में मेनू कार्ड छपा हों या जिनके नामपट हिंदी में हों।

शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी सामग्री के अभाव से जुड़ी समस्याओं पर भी चर्चा हुई। इस दिशा में भारत की अनेक संस्थाओं, जैसे, आगरा की केंद्रीय हिंदी निदेशालय और नई दिल्ली स्थित भारतीय सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र के साथ अमेरिका के हिंदी शिक्षक एवं शैक्षिक संस्थान मिल कर कार्य करें तो उसके सार्थक नतीजे निकल सकते हैं। इस किस्म के प्रयासों का संयोजन करने के उद्देश्य से न्यू यॉर्क में एक हिंदी केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। सम्मेलन में मॉरीशस स्थित विश्व हिंदी सचिवालय के उप महासचिव, गंगाधरसिंह सुखलाल की उपस्थिति कई अर्थों में महत्वपूर्ण रही। सुखलाल ने हिंदी भाषी जन समूह के लिए नया मंत्र प्रदान करते हुए आग्रह किया कि 'हिंदी को विश्व भाषा बनाना है तो उसे सिर्फ भारत की भाषा न समझा जाए। इसके समुचित विकास के लिए आवश्यक है कि दुनिया के सभी महाद्वीपों में हिंदी केंद्र स्थापित हों जिनका कार्य हिंदी सेवी संस्थाओं के बीच समन्वय स्थापित करना हो।' सुखलाल और गंभीर के प्रयासों से ही न्यू यॉर्क में हिंदी केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव सम्मेलन के समक्ष प्रस्तुत हुआ और सर्वसम्मति से अपनाया गया जिसमें भारत सरकार से आग्रह किया गया कि हिंदी केंद्र के विचार को मूर्त रूप देने के लिए शीघ्रातिशीघ्र ठोस कदम उठाए जाएँ। यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्सास में हिंदी उर्दू फ्लैगशिप नामक कार्यक्रम के निदेशक डॉ. रूपर्ट स्नेल ने अमेरिका में शिक्षकों को एक जुट होकर कार्य करने के लिए आह्वान दिया। भाषा शिक्षण में साहित्यिक पुट देते हुए रूपर्ट ने अज्ञेय की आवाज़ में उनकी कविताओं की रिकॉर्डिंग सुनाई। भाषा के विविध स्वरूपों को सार्थक रूप से शिक्षण सामग्री के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है।ऐसी आशा है कि अमेरिका में प्रौद्योगिकी की मदद से हिंदी शिक्षण का विस्तार करने में रूपर्ट के प्रयासों से मदद मिलेगी। सम्मेलन में साथियों और नए मित्रों से मिलकर फिर बिछड़ जाने का दुख रूपर्ट जी ने इस दोहे के साथ व्यक्त किया :

संगी सगरे चलि गए, साथि रहत न कोय।

एक जुदाई मीत जो जुदा न कबहू होय।।

ऊपर: बाएँ से: डॉ. सुरेन्द्र गंभीर, प्रो. गाब्रियेला निक इलियेवा, डॉ. रूपर्ट स्नेल ;नीचे: बाएँ से: डॉ. यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद, डॉ. शैलजा सक्सेना, पं. रामप्रसाद पारसराम

हिंदी को विरासत भाषा के रूप में सशक्त बनाने के लिए सेंटर फॉर एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स से सम्बद्ध डॉ. जॉय पैटन ने भारतीय मूल के लोगों को सलाह दी कि वे अपनी पहचान अपने भाषा से जोड़ें और 'अप्रवासी' जैसे विशेषणों का प्रयोग बंद करें। 'स्वयं को विरासत भाषा भाषी या 'अल्पसंख्यक भाषी' कह कर अपनी भाषा के प्रति निष्ठा जताना उसे सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।' दूसरी तरफ़ यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेनसिलवेनिया में 36 वर्षों तक प्राध्यापिका रही डॉ. विजय गंभीर का कहना था कि विरासत भाषा की व्यापकता उसे सशक्त बना सकती है। विजय जी, अमेरिका में हिंदी का मानक तैयार करने के क्षेत्र में वर्षों से कार्य कर रही हैं, उनकी राय थी कि अमेरिकी व्यापारिक समुदाय में हिंदी का समावेश एक आवशयक कार्य है क्योंकि हिंदी भाषी समाज वाणिज्य संबंधी आवश्यकताओं के लिए मुख्य धारा से जुड़ा हुआ है, इसलिए, वाल मार्ट, होम डिपो, बैंक जैसे राष्ट्रव्यापी व्यापारिक संस्थानों में जहाँ कर्मचारियों और ग्राहकों की बड़ी संख्या भारतीय मूल के लोगों की है, हिंदी भाषा का प्रयोग सहज रूप से होना चाहिए। अनेक व्यवसायों का इस दिशा में सहानुभूति पूर्ण रवैया भी है। जैसे कई दुकानें और बैंक अपने कर्मचारियों को हिंदी बोलने में समर्थ जैसे बिल्ले लगाने को कहते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ़ आयोवा के डॉ. फिलिप लुटजेन्डोर्फ ने, जो इन दिनों तुलसी रामचरितमानस का अंग्रेज़ी अनुवाद करने में व्यस्त हैं, भाषा की लचक और सामान्य जीवन में इसकी लोकप्रियता पर प्रकाश डाला और कहा कि अनुवाद साहित्य की पहुँच विस्तारित करने में भारी योगदान कर सकता है। लुटजेन्डोर्फ वर्षों तक हनुमान के विषय में शोध करते रहे हैं और इन दिनों अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडियन स्टडीज़ के निदेशक के रूप में अमेरिकी विद्यार्थियों को भारत में रह कर हिंदी की मौलिक अनुभूति प्रदान करने के कार्यक्रम को आगे बढ़ा रहे हैं।

सम्मेलन में ऑस्टिन, टेक्सास से पधारे डॉ. हरमन वैन ओल्फेन ने अपने रोचक संस्मरण में वाराणसी और मसूरी के जीवन की झलक पेश की तो दूसरी केंद्रीय हिंदी निदेशालय के उप सभापति डॉ. लक्ष्मी प्रसाद यार्लगड्डा ने हिंदी प्रसार को व्यापक बनाने के लिए गैर हिंदी भाषी विद्वानों को साहित्य और शिक्षण क्षेत्र में उचित स्थान प्रदान करने पर ज़ोर दिया। दिल्ली के लेडी श्री राम कॉलेज में पत्रकारिता की प्राध्यापिका वर्तिका नंदा तो सम्मेलन के आयोजन से इतनी प्रभावित हुईं कि इसे 'लघु भारत' ही कह डाला। भाषा के बदलते परिदृश्य पर टिप्पणी करते हुए उनका कहना था कि हिंदी के प्रयोग में बदलाव स्वाभाविक है, भारतीय संचार माध्यमों में हिंदी के साथ अंग्रेज़ी के व्यापक प्रयोग विचलित होने की आवश्यकता नहीं है। हिंदी के पठन-पाठन और उसके प्रचार-प्रसार से संबंधित इस महत्वपूर्ण सम्मेलन की परिकल्पना और उसके कार्यक्रम का निर्माण अनेक संस्थाओं और विशेषज्ञों के सहयोग और उनकी लगन से संभव हुआ। भारतीय समाज में हिंदी शिक्षा से सम्बद्ध न्यू जर्सी – न्यू यॉर्क की प्रमुख संस्थाएँ, युवा हिंदी संस्थान, एजुकेटर सोसाइटी, अखिल विश्व हिंदी समिति, का सम्मिलित प्रयास और न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय द्वारा परिसर उपलब्ध कराया जाना ही पर्याप्त नहीं था। हिंदी और संस्कृत की विद्वान प्राध्यापिका गैब्रिएला निक ने विविध विषयों के पारंगत विद्वानों को एक मंच पर लाने के लिए महीनों प्रयत्न किए। भारतीय दूतावास के अधिकारियों के सक्रिय समर्थन और सहयोग से नई ऊर्जा पैदा हुए जिसकी परिणति सम्मेलन के रूप में हुई। सबका एक ही लक्ष्य था : इक्कीसवीं सदी में हिंदी को आधुनिक भाषा के रूप में कैसे सशक्त बनाया जाए। न्यू यॉर्क में आयोजित यह अनूठा सम्मेलन एक वार्षिक अधिवेशन के रूप में पनपता रहे, यही सबका उद्देश्य है।

सम्मेलन का वेब साइट एक स्थायी पटल बन चुका है जहाँ भावी योजनाएँ और कार्यक्रम परिलक्षित होते रहेंगे। पाठकों से आग्रह है कि इस पटल को समृद्ध बनाने के लिए सहयोग और सुझाव दें : http://www.hindiconferenceamericas.com। न्यू जर्सी निवासी अशोक ओझा पेशेवर पत्रकार और हिंदी शिक्षक एवं प्रचारक हैं। युवा हिंदी संस्थान के अध्यक्ष के रूप में सम्मेलन के आयोजन में उनकी सक्रिय भूमिका रही।

श्री अशोक ओझा की रिपोर्ट

बालेन्दु शर्मा दाधीच की पुस्तक 'तकनीकी सुलझनें' का लोकार्पण

बाएँ से श्री राहुल देव, श्री बालेंदु शर्मा, श्री अशोक चक्रधर व भारत में मॉरीशस के उच्चायुक्त महामहिम डॉ. आर्य कुमार जगेसर

15 अप्रैल, 2014 को नई दिल्ली के इंडिया इंटरनैशनल सेंटर में चर्चित तकनीकविद् और वरिष्ठ पत्रकार बालेन्दु शर्मा दाधीच की नई पुस्तक 'तकनीकी सुलझनें' का लोकार्पण किया गया। भारत में मॉरीशस के उच्चायुक्त श्री आर्य कुमार जगेसर ने कई हिंदी विद्वानों, वरिष्ठ पत्रकारों, तकनीक-विशेषज्ञों तथा हिंदी प्रेमियों की उपस्थिति में पुस्तक का लोकार्पण किया। कार्यक्रम का आयोजन सोसायटी ऑफ़ इंडियन पब्लिशर्स, ऑथर्स एंड आर्टिस्ट (सिपा) की तरफ़ से किया गया था। तकनीकी सुलझनें में आम कंप्यूटर, स्मार्टफ़ोन, इंटरनेट, सोशल नेटवर्किंग, प्राइवेसी, डेटा सुरक्षा आदि विषयों से जुड़ी समस्याओं को सरल, सुबोध भाषा में सुलझाने का प्रयास किया गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता लोकप्रिय कवि अशोक चक्रधर ने की। वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव, कोशकार अरविंद कुमार, भाषा-तकनीक शास्त्री डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा आदि ने भी समारोह को संबोधित किया।

समारोह को संबोधित करते हुए श्री जगेसर ने कहा कि हिंदी सिर्फ़ भारत ही नहीं, बल्कि मॉरिशस की भी एक प्रमुख भाषा है और हिंदी का प्रयोग करने वाले सभी राष्ट्रों का दायित्व है कि वे इस भाषा के विकास और लोकप्रियता को बढ़ावा देने के लिए समन्वित कदम उठाएँ। भाषाएँ नए विषयों और नए विचारों को साथ लेकर चलती हैं, तभी बढ़ती हैं। इस तरह की पुस्तकें भाषा को समृद्ध करने के साथ-साथ लोगों के बीच तकनीकी मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने में भी अहम योगदान देंगी। उन्होंने पुस्तक के लेखक बालेन्दु शर्मा दाधीच की सराहना करते हुए कहा कि श्री दाधीच ने भारत के साथ-साथ मॉरीशस की भी अनेक तकनीकी परियोजनाओं में योगदान दिया है और वे मॉरीशस के मित्र हैं। उन्होंने वाणिज्य, शिक्षा, तकनीक आदि क्षेत्रों में मॉरीशस और भारत के संबंधों में निरंतर आ रही प्रगाढ़ता का भी उल्लेख किया और कहा कि वे इन संबंधों को और मज़बूत बनाने के लिए प्रयासरत हैं।

तकनीकविद् और भाषा शास्त्री डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा ने लेखक और पुस्तक का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा कि श्री दाधीच ने हिंदी में अनेक सॉफ्टवेयर विकसित कर उन्हें नि:शुल्क प्रयोग के लिए उपलब्ध कराया है और सिद्ध किया है कि आप किसी भी क्षेत्र में रहते हुए देश, समाज और मातृभाषा के प्रति योगदान दे सकते हैं। उन्होंने देश-विदेश में शिक्षकों, छात्रों तथा आम लोगों को तकनीकी रूप से सक्षम बनाने के लिए लेखक द्वारा समय-समय पर आयोजित की जाने वाली कार्यशालाओं की सराहना की।

श्री दाधीच ने हाल ही में मॉरीशस में एक कार्यशाला में लगभग 500 हिंदी शिक्षकों को हिंदी के तकनीकी अनुप्रयोगों में प्रशिक्षित किया। इससे पहले भी उन्होंने दक्षिण अफ़्रीका तथा मॉरीशस में लगभग 200 व्यक्तियों को प्रशिक्षण दिया है।

पुस्तक के लेखक बालेन्दु दाधीच ने कहा कि हिंदी में तकनीकी विषयों पर बहुत कम लिखा जा रहा है हालाँकि देश में करीब 90 करोड़ लोग किसी न किसी रूप में (कंप्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट आदि) तकनीक से जुड़े हैं। तकनीकी

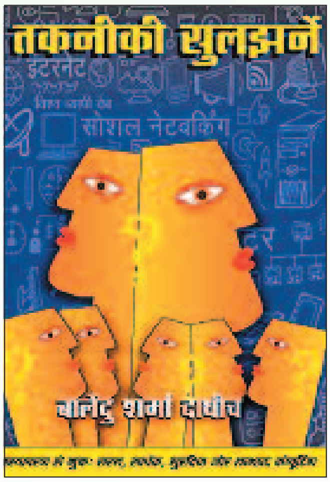

मुद्दों पर प्रामाणिक जानकारी का अभाव इस बड़ी आबादी को तकनीकी सुविधाओं का अधिकतम लाभ उठाने से वंचित कर देता है। अपने आसपास की दुनिया में तकनीकी माध्यमों के प्रति जागरूकता के अभाव ने उन्हें यह पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया। पुस्तक को आम कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्टफ़ोन तथा मोबाइल उपभोक्ताओं की समस्याओं को ध्यान में रखकर लिखा गया है। इसीलिए इसकी भाषा गूढ़ तकनीकी भाषा न होते हुए सरल है। पुस्तक में 30 अध्याय हैं जो कंप्यूटर उपयोक्ताओं की तीस बड़ी समस्याओं तथा जिज्ञासाओं का समाधान करते हैं। पुस्तक को रोचक बनाने के लिए इसे प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया है। हर अध्याय किसी न किसी कंप्यूटर उपयोक्ता के एक सवाल से शुरू होता है और उसका जवाब देते हुए न सिर्फ समस्या का समाधान प्रस्तुत किया जाता है बल्कि उसके विभिन्न पहलुओं का अन्वेषण भी किया जाता है। इसी तरह अनौपचारिक ढंग से पाठक को तकनीक की बुनियादी अवधारणाओं की जानकारी दे दी जाती है। उन्होंने बताया कि पुस्तक में ऑनलाइन सुरक्षा, कंप्यूटर सॉफ्टवेयर, साइबर क्राइम, रिमोट एक्सेस, प्राइवेसी, मोबाइल युक्तियाँ, कंप्यूटर सुरक्षा, डेटा एक्सेस, सर्च तकनीक, लाभप्रद इंटरनेट, कंप्यूटर नेटवर्किंग, हाईवेयर, संचार, इंटरनेट कनेक्टिविटी, सोशल नेटवर्किंग, कंप्यूटर उपभोक्ता आदि से जुड़े हुए मुद्दे उठाए गए हैं।

वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव ने कहा कि बालेन्दु ने अपने काम से तकनीकी क्षेत्र में विविधतापूर्ण कार्यों से अपनी अलग पहचान बनाई है, हालाँकि बुनियादी रूप से वे पत्रकार हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि और तकनीक-प्रेमी प्रो. अशोक चक्रधर ने की। उन्होंने कहा कि तकनीक जैसी जटिल चीज़ को सीधी सरल भाषा में लिखना एक बड़ी चुनौती है, जिसे लेखक ने बखूबी हल किया है। फेसबुक और इंटरनेट की अद्भुत लोकप्रियता के दौर में तकनीक को हिंदी में लेखन के महत्वपूर्ण विषय के रूप में लिया जाना ज़रूरी है। 'तकनीकी सुलझनें' को एक शुरूआत के रूप में देखा जाना चाहिए। अन्य लेखकों तथा विशेषज्ञों को भी ऐसी किताबें लिखने के लिए आगे आना चाहिए।

वरिष्ठ वैज्ञानिक और तकनीकविद् प्रो. ओम विकास ने अपने संदेश में कहा कि बालेन्दु शर्मा दाधीच की 'तकनीकी सुलझनें' लोकभाषा हिंदी में लिखी गई सरल, सुबोध और उपयोगी किताब है। लेखक के काम की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि भारत में डिजिटल चेतना प्रवर्तन में बालेन्दु का योगदान महत्वपूर्ण होगा।

कार्यक्रम को हिंदी के प्रसिद्ध कोशकार तथा समांतर कोश के सर्जक श्री अरविंद कुमार ने भी संबोधित किया। उन्होंने कहा कि हिंदी में बहुमुखी भाषायी युक्तियों के विकास पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके लिए इंटरनेट जैसे संसाधनों का प्रयोग बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। सिपा तथा हिंद पॉकेट बुक्स के प्रमुख श्री शेखर मल्होत्रा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। उन्होंने हिंदी साहित्य तथा साहित्येत्तर पुस्तकों तथा पढ़ने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए अपने संगठन की ओर से उठाए जाने वाले कदमों का विवरण दिया।

कार्यक्रम में उपस्थित प्रमुख लोगों में डॉ.नरेंद्र कोहली, अरविंद कुमार, विमलेश कांति वर्मा, सुनीति शर्मा, बीएल गौड़, प्रो. जगन्नाथन, अनुपमा झा, अनिल जोशी, विनोद संदलेश, वर्तिका नंदा, भावना सक्सेना, मीता लाल, धीरा वर्मा, राजमणि, राकेश पांडेय, राजेश मित्तल, निवेदिता मिश्रा झा, सरोज श्रीवास्तव, उमेश चतुर्वेदी, अन्नू आनंद, अविनाश वाचसपति, मनोहर नायक, ललिता खुराना, अखिल मित्तल, शशि प्रभा तिवारी, रूही सिंह, पुषकर पुष्प, रास विहारी, चंद्रमोहन रावल, सरोज श्रीवास्तव, राजीव तनेजा आदि शामिल थे। संचालन डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा ने किया।

विजय कुमार मल्होत्रा की रिपोर्ट

महात्मा गांधी संस्थान द्वारा श्री अभिमन्यु अनत को सम्मान

बाएँ से श्री मीमांसक, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, श्री बिजय मधु, श्री अभिमन्यु अनत व श्रीमती सरिता अनत, श्री रवींद्र द्वारका, डॉ. श्रीमती चंपा रघुनंदन व श्री राज हीरामन

19 मई, 2014 को स्कूल ऑव इंडियन स्टडीज़, सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस ने देश के प्रसिद्ध हिंदी लेखक व साहित्यकार श्री अभिमन्यु अनत के सम्मान में एक बधाई कार्यक्रम का आयोजन किया। समारोह में स्वयं अनत जी तथा उनकी पत्नी सरिता उपस्थित थे।

इस अवसर पर महात्मा गांधी संस्थान तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर के महानिदेशक, श्री विजय मधु तथा अध्यक्ष, श्री रविन्द्र द्वारका के साथ-साथ भारतीय उच्चायोग मॉरीशस के द्वितीय सचिव (शिक्षा व भाषा), श्री मीमांसक ने अनत जी के साहित्य पर प्रकाश डाला और उनकी प्रशंसा की। श्री विजय मधु ने उनके व्यक्तिगत जीवन और उनकी विभिन्न प्रतिभाओं पर सब का ध्यान केन्द्रित किया।

श्री अभिमन्यु अनत ने पूर्व में महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन व प्रकाशन विभाग में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपने विभाग द्वारा प्रकाशित 'वसंत' व 'रिमझिम' हिन्दी त्रैमासिक पत्रिकाओं को, जन्म दिया और कई वर्षों तक उनका संपादन भी किया। आपकी अब तक 85 से अधिक हिन्दी रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें उपन्यास मुख्य हैं। आपका उपन्यास 'लाल पसीना' मॉरीशसीय एवं भारतीय साहित्य की अमर कृति है। मॉरीशसीय हिंदी साहित्य जगत में अनत जी का योगदान अद्वितीय है।

समारोह के अंतर्गत 'वसंत' पत्रिका के ई-प्रारूप का लोकार्पण श्री अभिमन्यु अनत के हाथों किया गया। सम्मान स्वरूप अनत जी को शॉल तथा मोमेन्टो प्रदान किया गया।

अवसर पर राज हीरामन द्वारा बनायी गयी आधे घंटे की डाक्यूमेन्टरी 'अभिमन्यु अनत ए लेजेन्ड' के प्रदर्शन से श्रोता/ दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए।

मॉरीशस के हिन्दी, सामाजिक, धार्मिक, भाषा प्रचारक एवं स्वयं सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि व सदस्य तथा कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने अपनी उपस्थिति से समारोह की गरिमा बढ़ाई।

श्री राज हीरामन की रिपोर्ट

हिंदी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस द्वारा पुस्तक मेला

28 मई, 2014 को लोंग-माउंटेन स्थित सुन्दर मनराखाँ कॉलेज में पुस्तक मेले का आयोजन हुआ। महाविद्यालय के छात्रों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत हुआ और प्रबंधक श्री प्रवीण मनराखाँ ने सभी लोगों का स्वागत किया। कॉलेज की ओर से विशेष अतिथियों व कुछ स्थानीय लेखकों को सम्मानित भी किया गया। इस गतिविधि को विस्तार देने के लिए पुस्तक मेले का आयोजन देश के अन्य भागों में भी किया गया।

अवसर पर हिंदी स्पीकिंग यूनियन के प्रधान श्री राजनारायण गति ने बताया कि छात्रों के लिए पाठ्य पुस्तकों के अलावा अतिरिक्त पठन सामग्री की कमी महसूस होती है और अनेक शिक्षकों के अनुरोध पर भारत से प्रत्येक वर्ष विभिन्न विषयों की हिंदी पुस्तकें मंगवाई जाती हैं। गति जी ने यह भी बताया कि केवल छात्रों के लिए पुस्तकें नहीं लाई जाती हैं अपितु सभी पाठक वर्ग के लिए प्रावधान किया जाता है।

पिछले कुछ वर्षों से हिंदी संगठन द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी व पुस्तक मेले का आयोजन होता आ रहा है। इसकी लोकप्रियता व माँग को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष भी इस गतिविधि को दोहराया गया।

पठन पर बल देने के लिए व पुस्तकों के प्रति रुचि पैदा करने के लिए यूनेस्को (UNESCO) ने 23 अप्रैल, 2014 को विश्व पुस्तक दिवस घोषित किया है। इसी परिप्रेक्ष्य में हिंदी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस प्रत्येक वर्ष एक विशेष गतिविधि आयोजित करता है।

हिंदी स्पीकिंग यूनियन की रिपोर्ट

श्री इद्रदेव भोला की तीन पुस्तकों का लोकार्पण

24 मई, 2014 को आर्य सभा मॉरीशस, पोट लुई में हिन्दी लेखक संघ मॉरीशस के तत्वावधान में श्री इद्रदेव भोला इन्द्रनाथ की तीन पुस्तकों 'गागर में सागर (हाइकु महाकाव्य)', 'मॉरीशस के हिन्दी लेखक-लेखिकाएँ-भाग 1' और 'A Tribute to Pt. Dharmaveer Ghura' का लोकार्पण महात्मा गांधी संस्थान के वरिष्ठ व्याख्याता व सुप्रसिद्ध मॉरीशसीय हिंदी लेखक तथा कवि, डॉ. हेमराज सुन्दर की अध्यक्षता में हुआ।

श्री भोला द्वारा रचित 'गागर में सागर' हाइकु महाकाव्य मॉरीशसीय हिंदी साहित्य के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। ग्रंथ में 2,244 हाइकु कविताएँ संकलित हैं। चूँकि मॉरीशस में इस समय हाइकु कविता प्रचलित नहीं है और न ही यहाँ के अधिकांश कवि इसके लेखन शिल्प से अवगत हैं, इस नवीन विधा को अपनाते हुए श्री भोला ने मॉरीशसीय हिंदी साहित्य को एक नया आयाम दिया है।

भोला जी के दूसरे संग्रह 'मॉरीशस के हिन्दी लेखक-लेखिकाएँ-भाग 1' में मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी लेखक-लेखिकाओं के जीवन परिचय संकलित हैं। हिंदी लेखक संघ की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर यह विचार प्रस्तावित किया गया था कि संघ को जीवित रखने, इसके कार्यों को आगे बढ़ाने वाले कर्मठ सदस्यों तथा लेखक-लेखिकाओं के प्रति आभार स्वरूप एक पुस्तक प्रकाशित किया जाए जिसका परिणाम यह उत्कृष्ट संग्रह है।

'A Tribute to Pt. Dharmaveer Ghura' श्री भोला जी द्वारा संपादित, डॉ. विदूर दिलचन्द द्वारा अंग्रेज़ी में अनूदित तथा श्रीमती सावित्री घूरा द्वारा प्रकाशित पंडित धर्मवीर घूरा के प्रति श्रद्धांजलि है। पुस्तक में कुछ प्रसिद्ध मॉरीशसीय हिंदी लेखकों की दृष्टि से पंडित घूरा के जीवन की अनेक झांकियाँ मिलती हैं। पुस्तक का हिंदी संस्करण 'पं. धर्मवीर घूरा स्मृति ग्रन्थ' वर्ष 2011 में प्रकाशित हुआ था।

इन तीन रचनाओं का प्रकाशन करके श्री भोला ने मॉरीशसीय हिंदी साहित्य में एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

इनद्रदेव भोला इन्द्रनाथ की रिपोर्ट

हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस – स्थापना दिवस

14 जून, 2014 को हिंदी प्रचारिणी सभा के सुरुज प्रसाद मंगर भगत सभागार में हिंदी प्रचारिणी सभा का स्थापना दिवस भव्य रूप से मनाया गया। इस अवसर पर दो कार्यक्रम रखे गए थे, एक गोष्ठी तथा दूसरा कवि सम्मेलन। कार्यक्रम शुरु करने से पहले छात्रों द्वारा सभा-भवन के सामने स्थित सभा के मुख्य दाता श्री रामदास रामलखन (गिरधारी भगत) की प्रतिमा को एक पुष्प माला पेश की गई। हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस की स्थापना 12 जुन, 1926 को धारा नगर (लोंग माउंटेन) में हुई थी। सभा के उन दाताओं को श्रद्धांजलि प्रस्तुत करने के लिए हर वर्ष स्थापना दिवस मनाया जाता है।

प्रतिवर्ष इस अवसर पर सभा के छात्र किसी एक प्रसिद्ध साहित्यकार पर प्रस्तुति करते हैं और वहीं पर पढ़ने वाला एक छात्र गोष्ठी का संचालन करता है। साथ ही कार्यक्रम में एक मुख्य वक्ता को आमंत्रित किया जाता है। इस बार 'प्रेमचंद' पर प्रस्तुति हुई और मुख्य वक्ता के रूप में महात्मा गांधी संस्थान की व्याख्याता सुश्री अंजलि चिंतामणि को आमंत्रित किया गया।

गोष्ठी 11.00 बजे शुरु हुई जिसमें सभा के छात्रों ने प्रेमचन्द पर अपनी-अपनी तैयारियाँ प्रस्तुत कीं। छात्रा कुमारी झावरी ने बड़ी खूबी से गोष्ठी की प्रस्तुति की। छात्रों ने प्रेमचन्द की जीवनी तथा उनकी अनेक कहानियों पर टिप्पणी कीं। अंत में मुख्य वक्ता सुश्री अंजलि चिंतामणि ने प्रेमचन्द पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने उपस्थित छात्रों को प्रेमचन्द की कहानियों में सत्यं, शिवम्, सुन्दरम् होने का एहसास दिलाया जिससे छात्र अत्यन्त लाभांवित हुए।

स्थापना दिवस के अवसर पर दूसरा कार्यक्रम कवि-सम्मेलन रखा गया था जिसमें मॉरीशस के कवि-कवयित्रियाँ हिंदी भवन के प्रांगण में पधारे थे। जो हिंदी ज्ञान 1926 में गंगाधारा नगरी में बही थी और पूरे देश में फैली यह उसी का नतीजा है कि आज देश में इतने उच्च कोटि के साहित्यकार हुए हैं। स्थानीय कवियों में प्रचलित कवियों के अलावा कुछ नए उभरते कवि भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने की। उत्सव की शोभा में चार चाँद लगाने के लिए मुख्य अतिथि, भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव (शिक्षा व भाषा), श्री मीमांसक जी उपस्थित थे।

भोजपुरी संगठन की प्रधान, डॉ. श्रीमती सरिता बुद्धू; हिंदी संगठन की मंत्री, श्रीमती अंजू घरभरन; प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार, श्री रामदेव धुरंधर; डॉ. राजरानी गोबिन; डॉ. हेमराज सुन्दर; हिंदी लेखक संघ के प्रधान, श्री इन्द्रदेव भोला तथा कई अन्य लेखक, कवि, साहित्यकार, सभा के छात्र एवं श्रोतागण इस कवि सम्मेलन में उपस्थित रहे।

कवि सम्मेलन का संचालन महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग के श्री राज हीरामन ने किया। संचालन करते हुए कवियों को प्रोत्साहित करने हेतु वे बीच-बीच में अपनी कुछ क्षणिकाएँ भी सुना देते थे। बारी-बारी से कवि अपनी-अपनी कविताएँ सुनाते गए जिनमें हमें नए कवियों की कविताएँ भी सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। नए कवियों तथा नई कवयित्रियों को सुनकर लोगों ने उनकी प्रशंसा की। उन्हें सुनकर हीरामन जी ने यह भी कहा कि मॉरीशस में हिंदी का भविष्य तथा साहित्य सुरक्षित है।

कार्यक्रम के अंत में श्री मीमांसक ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री सुखलाल जी ने साहित्यकार श्रीमती भानुमती नागदान तथा श्री पुजानंद नेमा को श्रद्धांजलि प्रस्तुत की। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि ऐसा आयोजन वार्षिक रूप से होना चाहिए तथा कविताओं का संकलन भी होना चाहिए। फिर उन्होंने स्थानीय कविताओं पर कुछ प्रकाश डाला तथा अपनी एक सुन्दर कविता सुनाई। समापन में हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री बुधु ने साहित्यकारों, श्रोताओं एवं उपस्थित अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया तथा शांति-पाठ के साथ कवि सम्मेलन संपन्न हुआ।

हिंदी प्रचारिणी सभा की रिपोर्ट

हिंदी यू.एस.ए. द्वारा तेरहवाँ हिंदी महोत्सव

अमेरिका में गत तेरह वर्षों से सक्रिय "हिंदी यू.एस.ए." नामक स्वयंसेवी संस्था ने 17 और 18 मई को न्यू जर्सी के एडिसन शहर में अपना तेरहवाँ हिंदी महोत्सव बहुत धूमधाम से मनाया। इस हिंदी महोत्सव में "हिंदी यू.एस. की बीस हिंदी पाठशालाओं के 2000 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम को तैयार करने में 350 स्वयंसेवकों का योगदान रहा। द्विदिवसीय हिंदी महोत्सव में अनेक प्रतिभागियों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन सामूहिक तथा व्यक्तिगत स्तर पर किया गया।

हिंदी यू.एस.ए. की स्थापना सन् 2001 में अमेरिका में जन्मी भारतीय पीढ़ी को हिंदी की बुनियादी शिक्षा देने हेतु की गई थी। आज "हिंदी यू.एस.ए." नौ स्तरों में हिंदी की कक्षाएँ चला रही है जिनमें लगभग 4000 विधार्थी पढ़ रहे हैं। हिंदी यू.एस.ए. की 40 पाठशालाएँ अमेरिका के विभिन्न राज्यों में चल रही हैं। हिंदी यू.एस.ए. ने स्वयं की 26 पाठ्य एवं अभ्यास पुस्तकें बनाई हैं। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष वार्षिक और अर्धवार्षिक मौखिक और लिखित परीक्षाओं का आयोजन कर छात्र-छात्राओं को प्रमाण-पत्र दिए जाते हैं। प्रतिवर्ष लगभग 300 शिक्षकों को विभिन्न स्तरों में पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

हिंदी महोत्सव भी इसी शिक्षण का एक अंग है जिसके माध्यम से हिंदी सीख रहे विधार्थी अपनी हिंदी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं तथा भारतीय संस्कृति से जुड़ी अनेक बातें सीखते हैं।

महोत्सव के प्रथम दिन देशभक्ति के गीत तथा शिक्षाप्रद गीतों की दो सामूहिक गीत प्रतियोगिताओं, सामूहिक लोक नृत्य प्रतियोगिता, सामूहिक अभिनय गीत प्रतियोगिताओं, पाठ्यक्रम से संबंधित प्रतियोगिता तथा भारतीय संस्कृति की झलक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। महोत्सव के द्वितीय दिन सर्वाधिक लोकप्रिय ''कविता-पाठ प्रतियोगिता'' का आयोजन किया गया जिसमें सभी स्तरों के चुनिंदा 100 विद्यार्थियों ने कविताएँ सुनाकर दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर दिया। इसी दिन हिंदी यू.एस.ए. के उच्चस्तर-2 के 90 विद्यार्थियों को दीक्षांत समारोह में 'हिंदी स्नातक' की उपाधि प्रदान की गई। बहुत ही भावुक तथा रोमांचित वातावरण में 1000 दर्शकों की तालियों के साथ दीक्षांत समारोह संपन्न हुआ। सभी स्नातक विद्यार्थियों से हिंदी यू.एस.ए. के स्वयंसेवक बनने का आग्रह करते हुए संस्था की टीशर्ट तथा स्नातक की प्लाक प्रदान की गई। इसके बाद मध्यम-3 तथा उच्चस्तर -2 के विद्यार्थियों ने 'व्याकरण जैपर्डी' और 'हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता' में अपने हिंदी और व्याकरण के ज्ञान से दर्शकों को चकित कर दिया।

कार्यक्रम में 5 से लेकर 17 वर्ष के विद्यार्थियों ने भाग लिया। सभी विद्यार्थियों को पदक प्रदान किए गए तथा विजयी टीमों को ट्रोफी प्रदान की गईं। 48 निर्णायकों ने हिंदी महोत्सव में विभिन्न प्रतियोगिताओं का निर्णय किया।

हिंदी महोत्सव में हिंदी पुस्तकों के स्टॉल तथा भारतीय भोजन का प्रबंध किया गया था। कार्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि दोनों दिन कार्यक्रम 9-9 घंटे चला और समय पर प्रारंभ होकर समय पर समाप्त हुआ।

श्री देवेन्द्र सिंह की रिपोर्ट

'हिंदी–थाई–अंग्रेज़ी' त्रिभाषी कोश थाईलैंड की छात्रा द्वारा अहम शोध

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में थाईलैंड की छात्रा ने पर्यटन क्षेत्र का त्रिभाषी कोश तैयार कर भारत-थाईलैंड की समान संस्कृति को उजागर कर इस दिशा में अहम शोध प्रस्तुत किया है।'हिंदी-थाई-अंग्रेज़ी' के विशेष संदर्भ में एम.ए. हिंदी, अनुवाद प्रौद्योगिकी विषय में परियोजना कार्य के रूप में थाईलैंड की छात्रा वुत्थिफोङ थविनसमबत ने यह शोध अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ की एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. अन्नापूर्णा सी. के निर्देशन में पूरा किया है। इस कोश के कुल पांच अध्याय में उन्होंने सांस्कृतिक पर्यटन, पर्यावरण पर्यटन, शिक्षा पर्यटन और धार्मिक पर्यटन की चर्चा की है।

अपने शोध के बारे में वुत्थिफोङ थविनसमबत ने कहा कि इस कोश में लगभग 500 शब्दों का प्रयोग किया गया है जिसमें हिंदी-थाई और अंग्रेज़ी शब्दों का समावेश है। उन्होंने कहा कि भारत और थाईलैंड में काफ़ी सामाजिक तथा सांस्कृतिक समानताएँ हैं। ये समानताएँ भाषा और शब्दों में भी प्रतीत होती हैं। जैसे हिंदी में 'पूजा' तो थाई में 'बूजा', 'नरक' को 'नरोक', 'विश्वविद्यालय' को 'महाविद्यालय' कहा जाता है। उन्होंने कहा कि पर्यटन एक अंतर्राष्ट्रीय विषय है। भारत के संबंध में धार्मिक दृष्टि से बोध गया, सारनाथ, हिमालय, गंगानदी आदि स्थान अहम है जहाँ थाईलैंड के पर्यटक निरंतर आते रहते हैं। थाईलैंड भी भारत के पर्यटकों के लिए एक आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। सांस्कृतिक पर्यटन के संदर्भ में उनका मानना है कि भारत में जैसे 'दिवाली' और 'संक्रांति' मनाई जाती है वैसे थाईलैंड में 'लॉय-क्र- थाड़' और 'सोक्रांत' के नाम से ये उत्सव मनाये जाते हैं। थाईलैंड में पर्यटन के विकास में हिंदी सिनेमा की अहम भूमिका रही है। वहाँ हर महीने एक हिंदी फ़िल्म प्रदर्शित होती है। फ़िल्मों को अंग्रेज़ी भाषा में उप-शीर्षक से प्रदर्शित किया जाता है। थाईलैंड में हर साल 50 फ़िल्में बनती हैं। भारत की तुलना में कम फ़िल्में बनने के बावजूद वहाँ राम और रावण पर नाटक नियमित रूप से खेले जाते हैं। उन्होंने अपने शोध के हवाले से कहा कि दोनों देशों में पर्यटन एक साथ विकसित हो रहा है। कहा जा सकता है कि अगर भारतीय पर्यटक थाई जाते हैं तो उन्हें वहाँ बहुत सी ऐसी चीज़ें मिलती हैं जिसमें भारतीयता झलकती है। शोधकर्ता ने पर्यटन और अनुवाद से संबंधित 20 पुस्तकों का अध्ययन कर इस शोध को पूरा किया है। मूलतः बैंकॉक स्थित सिल्पाकॉर्न विश्वविद्यालय से थाई भाषा में बी.ए. करने के बाद वुत्थिफोङ थविनसमबत ने हिंदी विश्वविद्यालय आने का निर्णय किया और वह 2012 में वर्धा आयी। अब उनका अगला कदम है प्रशासन और नियम-कानून पर त्रिभाषा कोश तैयार करना।

बी.एस. मिरगे की रिपोर्ट

जेएनयू में 'हमारे समय का साहित्य' विषयक राष्ट्रीय परिसंवाद

25 - 27 मार्च, 2014 को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के भारतीय भाषा केंद्र द्वारा **'हमारे समय का साहित्य'** पर केन्द्रित तीन दिवसीय परिसंवाद और रचना पाठ का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुधीर कुमार सोपोरी के अनुसार यह आयोजन अनूठा रहा क्योंकि कार्यक्रम में जहाँ एक ओर साहित्य और समाज से संबद्ध पक्षों पर चर्चा की गई, वहीं दूसरी ओर चर्चित रचनाकारों ने अपनी रचनाओं का पाठ भी किया।

'हमारे समय का साहित्य' नामक इस सत्र में उद्घाटन व्याख्यान देते हुए हिंदी के प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह ने कहा कि वर्तमान समय को पूंजीवादी ताकतों और जनविरोधी सरकारी नीतियों ने अत्यंत जटिल बना दिया है। इस बदलते हुए परिवेश में मनुष्य के महत्व पर सबसे ज़्यादा आघात हुआ है। इसके कारण हमारे समय के साहित्य की रचना भूमि और सामाजिक भूमिका तेज़ी से प्रभावित हुई है। जिससे समाज के वंचित समाज का साहित्य सामने आने लगा है। सत्र का मुख्य वक्तव्य देते हुए विख्यात आलोचक मैनेजर पाण्डेय ने कहा कि आज आत्मसंघर्ष की चर्चा तो साहित्य में पर्याप्त हो रही है, किन्तु यह समाज-संघर्ष का विरोधी बन गया है। इस भेद को समाप्त करना ही वर्तमान साहित्य की सबसे बड़ी चुनौती है। सत्र में वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह ने **'बनारस'** कविता का पाठ किया। कथाकार मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यास **'मिलजुलमन'** के कुछ अंश सुनाए। हंस के पूर्व कार्यकारी संपादक संजीव ने भी रचना पाठ में भाग लिया। लेखक प्रेमपाल शर्मा ने पठित रचनाओं पर चर्चा की। कार्यक्रम की शुरुआत में आलोचक देवेन्द्र चौबे ने परिसंवाद का परिचय देते हुए सन् 90 के बाद की उन बदलती हुई सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों को रेखांकित किया जिन्होंने साहित्य की दुनिया को गहराई से प्रभावित किया है। इससे पूर्व भारतीय भाषा केंद्र के अध्यक्ष और वरिष्ठ आलोचक रामबक्ष ने अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि यह परिसंवाद इसलिए अनूठा है कि इसमें लेखक, पाठक और आलोचक एक-साथ बैठकर साहित्य के सवालों पर विचार-विमर्श करेंगे। सत्र की अध्यक्षता भाषा संस्थान के अधिष्ठाता और भाषाविद एम. असलम इस्लाही ने की।

परिसंवाद का दूसरा दिन 'कथा साहित्य' पर केन्द्रित था जिसमें प्रख्यात आलोचक रोहिणी अग्रवाल ने **'हमारा समय और कथा-साहित्य'** पर मुख्य व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दौरान रचना पाठ में पंकज बिष्ट, प्रेम कुमार मणि, सूजन विश्वनाथन, सूर्यनाथ सिंह, राकेश तिवारी और हरिराम मीणा ने भाग लिया। तत्पश्चात् आयोजित परिसंवाद में कथाकार कमल कुमार, श्यौराज सिंह बेचैन, संजीव कुमार, बलवंत कौर, स्मिता चतुर्वेदी, डी. के. लोबियाल, ओमप्रकाश सिंह, आर. थामोथरन, रामचंद्र, गंगा सहाय मीणा आदि ने भाग लिया।

कार्यक्रम का तीसरा दिन 'काव्य-साहित्य' पर केन्द्रित था जिसमें वरिष्ठ आलोचक प्रो. रविभूषण ने **'हमारा समय और कविता'** पर मुख्य व्याख्यान प्रस्तुत किया। काव्य-पाठ सत्र में अशोक वाजपेयी, मंगलेश डबराल, मकरंद परांजपे, अनामिका, लीलाधर मंडलोई, बद्रीनारायण, दिनेश सिंदल और जयप्रकाश कर्दम ने अपनी कविताओं का पाठ किया। सत्र का संचालन करते हुए प्रो. गोबिंद प्रसाद ने भी अपनी कविताएँ सुनाईं। परिसंवाद में भाग लेते हुए कवि दुर्गा प्रसाद गुप्त ने जहाँ समकालीन कविता की चुनौतियों की चर्चा की, वहाँ उर्दू के शायर अख्लाक अहमद आहन ने कविता के वैश्विक परिप्रेक्ष्य का उल्लेख किया। अनीता सच्चिदानंद, मणीन्द्र नाथ ठाकुर, राजेश पासवान, रमण प्रसाद सिन्हा, शिवप्रकाश सहित अनेक शोध छात्र और पाठकों ने परिचर्चा में भाग लिया।

समापन सत्र में जनसत्ता के संपादक ओम थानवी ने अपने वक्तव्य में कहा कि साहित्य और समाज में बढ़ते हुए भेद के लिए हमारे साथ के लोग ही ज़िम्मेदार हैं। आज हिंदी के साहित्य-संसार पर कुछ लोगों ने पूरी तरह कब्ज़ा कर लिया है, जो एक सुनियोजित तरीके से साहित्य की श्रेष्ठ रचनाओं को पाठ्यक्रमों और विचार-विमर्श के केंद्र से बाहर रखते हैं। ऐसा करनेवाले कुछ शिक्षक, लेखक, संपादक और प्रकाशक हैं। ईमानदारी के अभाव में ऐसे लोग अपने हितों को चमकाने के क्रम में साहित्य का गला घोंटने में लगे हुए हैं। प्रो. तुलसी राम ने अपनी आत्मकथा के बहाने आत्मसंघर्ष और समाज संघर्ष के द्वंद्व पर अपनी बात रखी। डॉ. संदीप चटर्जी ने एक कविता का पाठ किया।

संगीत-मीडिया से जुड़ी पूनम एस. कुदेसिया ने इस आयोजन को जनेवि साहित्योत्सव बताते हुए विश्वविद्यालय की तरफ से आए हुए सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

दीपकुमार मित्तल भारतीय भाषा केंद्र, जेएनयू, नई दिल्ली

हिंदी में विज्ञान के सबसे बड़े सम्मेलन का आयोजन संपन्न

5-7 दिसंबर, 2013 को भारतीय रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ.) द्वारा भगवंत सभागार, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली में 'विश्व की प्रगति में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का योगदान' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली इसकी आयोजक प्रयोगशाला थी।

सम्मेलन का उद्घाटन 5 दिसंबर, 2013 को हुआ तथा समापन समारोह 7 दिसंबर, 2013 को। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में श्री अरुण कुमार जैन, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय उपस्थित थे। श्री अविनाश चंदर, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, डॉ. जी. मालकोंडय्या, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (मानव संसाधन); श्री सुनील शर्मा, निदेशक, डेसीडॉक, दिल्ली ने दीप डेसीडॉक ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सम्मेलन के बारे में पूर्ण जानकारी दी। प्रथम दिन परिचर्चाओं का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के गणमान्य व्यक्तियों ने अपने-अपने अनुभव साझा किए।

इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्देश्य विज्ञान को जनमानस तक उनकी अपनी भाषा में पहुँचाना है ताकि उनको इससे अधिक से अधिक लाभ मिल सके। राष्ट्रपति महात्मा गांधी जी ने कहा था कि किसी भी राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए एक भाषा का होना अनिवार्य है जो कि संदर्भ में हिंदी होगी। उनके बताए रास्ते पर चलते हुए इस वैज्ञानिक सम्मेलन का आयोजन हिंदी में किया गया।

मुख्य अतिथि ने अपने उद्घाटन उद्बोधन में बताया कि पूरे देश में राजभाषा का कार्यान्वयन एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। समय-समय पर संसदीय निरीक्षण भी किए जाते हैं और राष्ट्रपति जी की ओर से भी आदेश दिए जाते हैं। सम्मेलन की सफलता पर बोलते हुए श्री जैन ने बताया कि राजभाषा तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी सम्मेलन की दृष्टि से इस सम्मेलन के लिए प्राप्त आलेखों की संख्या आज तक किसी भी सम्मेलन के लिए प्राप्त अधिकतम है और यह एक रिकॉर्ड है। हम ऐसी हिंदी का प्रयोग करें कि आमजन सरलता तथा आसानी से समझ सकें। इस दिशा में आपने जो यह तकनीकी साहित्य हिंदी में सृजन करने का कार्य किया है, यह प्रशंसनीय है। जब तक हमारे अनुसंधान तथा शोध जनसाधारण तक उनकी अपनी भाषा में नहीं पहुँचेंगे तब तक हमारा प्रयास बेकार है। हमें चाहिए कि हम अपने शोध, अपने अनुसंधान में सरल से सरल हिंदी भाषा का प्रयोग करें, ताकि यह जनसाधारण तक पहुँचे।

श्री सुनील शर्मा ने धन्यवाद प्रस्तुत किया तथा अपने भाषण में इस आयोजन की तुलना विश्व हिंदी सम्मेलन से की। इस दौरान अतिथियों द्वारा प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया गया। प्रदर्शनी में डी.आर.डी. ओ. की विभिन्न प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं तथा अन्य एजेंसियों, जैसे कि राजकमल प्रकाशन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास एवं अन्य के स्टॉल लगे थे। उद्घाटन समारोह में लिमका बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे, जिन्होंने प्राप्त आलेखों एवं प्रकाशित आलेखों की दृष्टि से इसे विश्व का सबसे बड़ा सम्मेलन माना तथा बताया कि यह कीर्तिमान लिमका बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के 2015 संस्करण में प्रकाशित किया जाएगा ।

सम्मेलन के लिए 20 राष्ट्रों सहित देश-विदेश के विद्वानों से लगभग 700 आलेख/शोध पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से लगभग 650 आलेखों को सम्मेलन में प्रस्तुति हेतु चयनित किया गया। इन आलेखों/शोध पत्रों को 11 संपादित पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया गया । सम्मेलन में प्राप्त आलेखों/शोध पत्रों की स्मारिका तथा 11 पुस्तकों का विमोचन किया गया, इसके साथ-साथ 'डी.आर.डी.ओ.-एक स्वर्णिक यात्रा' नामक पुस्तक का भी विमोचन किया गया।

सम्मेलन में देश विदेश के विद्वानों द्वारा 292 मौखिक प्रस्तुतियाँ एवं 368 पोस्टर प्रस्तुतियाँ हुईं। इन्हें 36 सत्रों में छह व्याख्यान कक्षों में एक साथ प्रस्तुत किया गया। सम्मेलन में देश-विदेश से लगभग 1000 वैज्ञानिक/अकादमिकगण अपने शोध-पत्रों को राजभाषा हिंदी में प्रस्तुत किया ।

डॉ. राकेश कुमार दूबे की रिपोर्ट

49वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि प्रो. केदारनाथसिंह को

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रदत्त वर्ष 2013 का ज्ञानपीठ पुरस्कार हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि प्रो. केदारनाथ सिंह को दिये जाने का निर्णय लिया गया है। पुरस्कार की घोषणा ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित डॉ. सीताकान्त महापात्र की अध्यक्षता में छः सदस्यीय चयन समिति द्वारा बैठक में लिए गए निर्णय के बाद की गयी। इस पुरस्कार समिति के सदस्यों में प्रो. नित्यानन्द तिवारी, प्रो. अमिय देव, श्री शंकर शारदा, श्री आर. शौरिराजन, श्री सुरजीत पातर, श्री दिनेश मिश्र और ज्ञानपीठ के निदेशक श्री लीलाधर मंडलोई प्रमुख थे।

1934 में उत्तरप्रदेश के वलिया ज़िले के चकिया गाँव में जन्मे केदारनाथ सिंह अपनी कविताओं में जनपदीय उपस्थिति के लिए जाने जाते हैं। श्री सिंह कविता में आधुनिकता के साथ-साथ गीतात्मकता, प्रकृति तथा मनुष्य के बहुआयामी संबंधों को बड़ी सहजता के साथ प्रस्तुत करने के लिए चर्चित हैं। केदारनाथ सिंह की कविता ने न केवल हिंदी अपितु भारतीय भाषा के कविता बिम्ब-विधान, मुहावरे और भाषा को गहरे तक प्रभावित किया। श्री सिंह उन कवियों में समादृत हैं जिन्होंने कविता को सादगी से विन्यस्त करते हुए आन्तरिक लय को नयी दीप्ति प्रदान की।

केदार जी ने अज्ञेय द्वारा संपादित तीसरे सप्तक के एक सशक्त कवि के रूप में ख्याति प्राप्त की थी। श्री सिंह के प्रकाशित कविता-संग्रह हैं - 'अभी बिल्कुल अभी', 'ज़मीन पक रही है', 'यहाँ से देखो', 'बाघ', 'अकाल में सारस', 'उत्तरकबीर और अन्य कविताएँ', 'तालस्तोय और साइकिल' और हाल ही में प्रकाशित 'सृष्टि पर पहरा' आदि। अन्य प्रमुख किताबें हैं- 'मेरे समय के शब्द', 'कल्पना और छायावाद', 'हिंदी कविता में बिम्ब विधान', 'कब्रिस्तान में पंचायत' और 'ताना बाना'।

'श्री सिंह 'अकाल में सारस' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार (1989) के साथ-साथ मैथिलिशरण गुप्त पुरस्कार, कुमार आशान पुरस्कार (केरल), दिनकर पुरस्कार, जीवनभारती सम्मान (ओड़िसा) और व्यास सम्मान सहित अनेक प्रतिष्ठित सम्मान व पुरस्कार से सम्मानित हैं।

श्री लीलाधर मंडलोई की रिपोर्ट

अभ्युदय बहुउद्देशीय संस्था, वर्धा की द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी मॉरीशस में

28-29 मई, 2014 को अभ्युदय बहुउद्देशीय संस्था, वर्धा(महाराष्ट्र भारत) ने मॉरीशस में अपनी दूसरी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें 52 भारतीय प्रतिनिधियों का एक मण्डल मॉरीशस आया हुआ था। अवसर पर 19 भारतीय और 14 मॉरीशसीय हिन्दी रचनाकारों और सेवियों को 'श्री स्वराज्य प्रसाद द्विवेदी हिन्दी सरस्वती सम्मान' दिया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि मॉरीशस के हिन्दी साहित्यकार श्री राज हीरामन थे तथा समापन समारोह के मुख्य अतिथि कला एवं संस्कृति मंत्री, माननीय मुकेश्वर चुनी जी थे। संगोष्ठी के अंतर्गत भारतीय विद्वानों, प्राध्यापकों, विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्षों और प्रोफेसरों ने अपने शोध पत्र पढ़े और विचार-विमर्श किया। प्रतिनिधि-मण्डल ने मॉरीशस गणराज के राष्ट्रपति महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग से भी औपचारिक भेंट की। अपने मॉरीशस प्रवास के दौरान प्रतिनिधि मण्डल ने हिन्दी संगठन और महात्मा गांधी संस्थान के दौरे भी किए। प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व श्री नरेंद्र दंढ़ार और वैद्यनाथ अय्यर ने किया।

श्री राज हीरामन की रिपोर्ट

दक्षिण अफ़्रीका की लक्ष्मीबहन गांदाभाई पंछिया को हिंदी सेवा सम्मान

लक्ष्मीबहन गांदाभाई पंछिया बेनोनी, खौटेंग की वरिष्ठ निवासी हैं। धर्म व भाषा के प्रचार के क्षेत्र में आपने अत्यन्त सराहनीय कार्य किए हैं। आपका जन्म 1932 में गुजरात, भारत में हुआ था। विवाह के एक वर्ष बाद ही पति श्री गांदाभाई पंछिया के साथ दक्षिण अफ्रीका प्रवास किया। उस समय बेनोनी में लवटन परिवार हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में काफ़ी जोश के साथ कार्यरत थे। 70 के दशक में जब उस समय कार्यरत हिंदी शिक्षिका श्रीमती सरसबहन लवटन अत्यन्त बीमार पड़ीं तब श्रीमती लक्ष्मीबहन गांदाभाई पंछिया ने उनकी सहायता की और बेनोनी में हिंदी शिक्षण की ज़िम्मेदारी उठाई। हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए वे माताजी के नाम से अत्यन्त प्रसिद्ध हुईं। माताजी ने जीवन भर मानव सेवा की तथा भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु अपना ज्ञान बाँटा और समाज को शिक्षित किया। उनके मार्गदर्शन, तटस्थ भावना तथा अच्छी सलाह के लिए सभी उनका बहुत सम्मान करते। आपने निश्छल भाव से हमेशा हिंदी का प्रचार-प्रसार किया तथा हिंदी के उन्नयन के लिए अपना समय और जीवन दोनों समर्पित कर दिया। खौटेंग में हिंदी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए वर्ष 2010 में आपको 'हिंदी सेवा सम्मान अवार्ड' प्रदान किया गया।

साभारः हिंदी खबरः दक्षिण अफ़्रीका, अप्रैल 2014: अंक 8

श्रद्धांजलि

डॉ. मदनलाल मधु का देहान्त

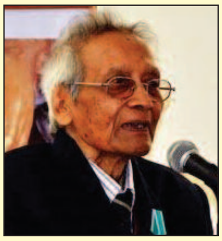

पिछले 57 सालों से रूस में रह रहे और रूस के प्रसिद्ध लेखकों और कवियों की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद करने वाले डॉ. मदनलाल मधु का सोमवार, 7 जुलाई, 2014 की शाम को देहान्त हो गया।

डॉ. मधु 89 वर्ष के थे और पिछले कुछ समय से बीमार चल रहे थे। डॉ. मधु ने अनेक विश्वप्रसिद्ध रूसी लेखकों और कवियों की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद किया है। उन्होंने रसूल हमज़ातोव की रचना 'मेरा दगिस्तान' को हिंदी में प्रस्तुत किया था। उनके द्वारा अनूदित कृतियों में लेव तालस्तोय के उपन्यास 'युद्ध और शांति' तथा 'आन्ना करेनिना' भी शामिल हैं। इसके अलावा उन्होंने विश्व प्रसिद्ध रूसी कवि अलेक्सान्दर पूश्किन की कविताओं और गद्य-रचनाओं का भी हिंदी में अनुवाद किया है। डॉ. मदनलाल मधु द्वारा अनूदित गोर्की, दस्तायेवस्की और तुर्गनेव की रचनाएँ भी हिंदी के पाठकों के बीच बेहद लोकप्रिय हैं।

मास्को स्थित हिन्दुस्तानी समाज के अध्यक्ष योगेन्द्र नागपाल ने डॉ. मधु को श्रद्धांजलि दी है और हिंदी के प्रचार प्रसार में उनकी भूमिका को सराहा है। डॉ. मधु करीब 25 साल तक हिन्दुस्तानी समाज, मास्को के अध्यक्ष रहे थे। रेडियो रूस भी उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

डॉ. मदनलाल मधु भारत-रूस के बनते रिश्ते को सांस्कृतिक एवं भाषाई रूप से और सुदृढ़ करने वाले युग पुरुष थे। अथाह ज्ञान एवं अनुभव से उन्होंने दोनों देश के साहित्य को समृद्ध किया। उनका निधन एक युग का बीत जाना है और दोनों देशों के लिए सांस्कृतिक क्षति है। उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि।

रेडियो रूस से साभार

वॉन पब्लिक लाइब्रेरी-वार्षिक काव्य संगोष्ठी

25 मई, 2014, कनाडा के वॉन शहर की वॉन पब्लिक लाइब्रेरी में वार्षिक काव्य संगोष्ठी के अवसर पर काव्य-पाठ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री श्याम त्रिपाठी (संरक्षक और मुख्य संपादक हिंदी चेतना) ने की और संचालन श्रीमती सरोज सोनी ने किया। संयोजक थे वॉन पब्लिक लाइब्रेरी के श्री सुब्रह्मण्यम। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ सरोज सोनी, गोपाल बघेल, सविता अग्रवाल 'सवि', उषा बधवार की सरस्वती-वन्दना से हुआ। इस अवसर पर सविता अग्रवाल ने हाइकु सुनाकर श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। उषा बधवार, सरोज सोनी, श्रीमती प्रेम मलिक, सुमन घई (संपादक-साहित्यकुंज डॉट नेट), अनिल पुरोहित, सुरेन्द्र पाठक, प्रो. देवेन्द्र मिश्र और गोपाल बघेल तथा श्री श्याम त्रिपाठी ने भी अपनी कविताएँ सुनाईं। जयश्री ने भक्ति गीत सुनाकर सबको भावविभोर कर दिया। अवसर पर प्रमिला भार्गव भी उपस्थित थीं।

इस कार्यक्रम को संपन्न करने में और हिंदी की पुस्तकें प्रदर्शित करने में श्री सुब्रह्मण्यम का योगदान प्रशंसनीय रहा।

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में दो-दिवसीय अनुवाद कार्यशाला

28 एवं 29 मार्च, 2014 को महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के दूर शिक्षा निदेशालय और साने गुरुजी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट, मुंबई के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय अनुवाद कार्यशाला संपन्न हुईं। समापन समारोह में दूर शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. मनोज कुमार, अंतरभारती अनुवाद सुविधा केंद्र की अध्यक्ष प्रो. पुष्पा भावे, इंडिया इंटरनेशनल मल्टीव्हर्सिटी, पुणे के कुलपति प्रो. प्रमोद तलगेरी तथा प्रख्यात अनुवादक प्रो. नीरजा मंचस्थ थे।

समापन वक्तव्य में प्रो. पुष्पा भावे ने कहा, अनुवाद करते समय मूल लेखक और पाठ के बीच अनुवादक का रिश्ता होना चाहिए। जब तक अनुवादक को किसी भी दो भाषाओं का ज्ञान नहीं होता तब तक प्रामाणिक अनुवाद नहीं हो सकता। प्रो. मनोज कुमार ने अनुवाद करते समय अपने विवेक का उपयोग करने की सलाह दी और कहा कि ज्ञान के विस्तार के लिए अनुवाद के माध्यम से प्रयास होने चाहिए ।

समापन समारोह में कार्यशाला में सहभागी प्रतिभागियों को अतिथियों के द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। समारोह का संचालन सहायक प्रोफेसर संदीप सपकाले ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्रोफेसर अमरेंद्र कुमार शर्मा ने किया। समारोह में विश्वविद्यालय के अध्यापक, शोधार्थी, विभिन्न स्थानों से आए प्रतिभागी तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे ।

साभारः http://hindipremi.blogspot.com

गोइन्का पुरस्कार एवं सम्मान समारोह

6 अप्रैल, 2014 को 'भारतीय विद्या भवन' बेंगलूरु में गोइन्का पुरस्कार एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि कार्पोरेशन बैंक (मेंगलूर) के सहायक महाप्रबंधक डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल जी थे। जैन ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन्स के चेयरमैन डॉ. चेनराज रॉयचंद ने समारोह की अध्यक्षता की।

इस अवसर पर डॉ. काशीनाथ अंबलगे को उनकी कृति ''सुमित्रानंदन पंत अवरा कवितेगलू'' के लिए कमला गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा घोषित इक्कीस हज़ार राशि के ''पिताश्री गोपीराम गोइन्का हिंदी-कन्नड़ अनुवाद पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया। साथ ही धारवाड़ की सुप्रसिद्ध कन्नड़ साहित्यकार एवं कर्नाटक साहित्य अकादमी की नवनिर्वाचित अध्यक्ष, प्रो. मालती पट्टणशेट्टी को ''गोइन्का कन्नड़ साहित्य सम्मान'' दिया गया। कर्नाटक के वरिष्ठ हिंदी सेवी श्री रंगनाथराव राघवेंद्र निडगुंदि को ''गोइन्का हिंदी साहित्य सम्मान'' से सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर साहित्येत्तर क्षेत्र के सम्मान ''दक्षिण ध्वजधारी सम्मान'' से कर्नाटक की सिरमौर प्रतिष्ठित समाज-सेवी धर्मस्थला की श्रीमती हेमावती वी. हेगडे को सम्मानित किया गया।

समारोह का संचालन डॉ. आदित्य शुक्ल ने किया। पुरस्कार समारोह के अंत में एक अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें कवि सम्राट श्री आशकरण अटल, श्री सुभाष काबरा, श्री श्याम गोइन्का, श्री मुकेश गौतम, पूरण पंकज तथा बैंगलोर के ख्याति प्राप्त कवि डॉ. आदित्य शुक्ल ने अपनी कविताओं से बेंगलूरु के साहित्य-रसिकों को मंत्र-मुग्ध किया।

कमला गोइन्का फाउण्डेशन

डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र को 'अपनी भाषा' ने सम्मानित किया

13 अप्रैल, 2014 को कोलकाता की 'अपनी भाषा' संस्था ने निष्ठावान प्रशासक और ओड़िया भाषा से हिंदी में अनुवाद करने के क्षेत्र में विख्यात डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र को 'जस्टिस शारदा चरण मित्र स्मृति भाषा सेतु सम्मान 2014' से सम्मानित किया। डॉ. मिश्र लगभग पैंतीस वर्ष से राष्ट्रभाषा हिंदी और ओड़िया के बीच सेतु बंधन से संलग्न हैं। आपकी आरंभिक शिक्षा रायरंगपुर, मयूरगंज, ओड़िशा में हुई और उच्च शिक्षा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में।

आप विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस में 3 साल तक उप महासचिव और महासचिव के पद पर कार्य कर चुके हैं। आपके द्वारा ओड़िशा से हिंदी में अब तक 68 पुस्तकें अनूदित व प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें कविता, कहानी, उपन्यास आदि हर विधा की पुस्तकें हैं। आपकी अनूदित पुस्तकें भारतीय ज्ञानपीठ, साहित्य अकादमी, नेशनल बुक ट्रस्ट, प्रभात प्रकाशन, राजकमल प्रकाशन जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से प्रकाशित हो चुकी हैं।

ओड़िशा के प्रख्यात साहित्यकार डॉ. सीताकांत महापात्र की कृतियों का हिंदी अनुवाद करने के लिए आपको वर्ष 1998 का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसके अलावा भी आपको केंद्रीय हिंदी निदेशालय , उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, भारतीय अनुवाद परिषद, हिंदी साहित्य सम्मेलन तथा राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास आदि संस्थानों की ओर से अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

9वें विश्व हिंदी सम्मेलन 2012, जोहान्सबर्ग में आपको विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। आप विगत 25 वर्षों से एनटीपीसी लिमिटेड, नई दिल्ली से जुड़े हैं और संप्रति उसमें अपर महाप्रबंधक (राजभाषा) के पद पर कार्यरत हैं। डॉ. मिश्र को समस्त हिंदी प्रेमियों की ओर से बधाई।

अनिरुद्ध सिंह सेंगर 'खुशबू सरस्वती सम्मान-2014' से सम्मानित

साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था 'खुशबू' रौन, भिण्ड द्वारा गुना के साहित्यकार अनिरुद्ध सिंह सेंगर को साहित्य के संवर्धन में निरंतर समर्पित सक्रियता के लिए 'खुशबू सरस्वती सम्मान-2014' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन का आयोजन भी किया गया जिसमें सुश्री संगीता सरल भोपाल, कन्हैया राज ब्यावरा, डॉ. मुकेश मासूम खातेगांव, प्रह्लाद भक्त मुरैना, मुकेश शांडिल्य हरदा, रजा ग्वालियारी ग्वालियर, अरविंद पोटा सुमावती, राजकिशोर राज ग्वालियर, अर्जुन सिंह चाँद झांसी ने काव्य पाठ किया। मुख्य वक्ता के रूप में साहित्य क्रान्ति पत्रिका के संपादक अनिरुद्ध सिंह सेंगर ने अपना प्रेरक उद्‌बोधन देते हुए अपने संस्कारों, अपनी संस्कृति से जुड़े रहने की बात की। कार्यक्रम का संचालन पत्रकार हरीबाबू शर्मा 'निराला' ने एवं आभार कार्यक्रम संयोजक डॉ. शिवेन्द्र सिंह ने माना।

अनिरुद्ध सिंह सेंगर की रिपोर्ट

प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा खांपा रत्न सम्मानोपाधि से विभूषित

रतलाम में आयोजित 10वें अ.भा. खांपा सम्मेलन में प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा को सम्मानित किया गया। विक्रम विश्वविद्यालय के कुलानुशासक एवं प्रसिद्ध समालोचक प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा को उनकी सुधी साहित्यिक साधना, हिंदी एवं मालवी भाषा के व्यापक प्रसार एवं संवर्धन एवं संस्कृति के क्षेत्र में दिए गए महत्वपूर्ण योगदान और किए गए उल्लेखनीय कार्यों के लिए हल्ला गुला साहित्य मंच, रतलाम द्वारा खांपा रत्न सम्मानोपाधि से अलंकृत किया गया। इस आयोजन में देश के सैंकड़ों साहित्यकार एवं संस्कृतिकर्मी उपस्थित थे। प्रो. शर्मा आलोचना, लोकसंस्कृति, रंगकर्म, राजभाषा हिंदी एवं देवनागरी लिपि से जुड़े शोध, लेखन एवं नवाचार में विगत ढाई दशकों से निरंतर सक्रिय हैं । उनके द्वारा लिखित एवं संपादित पच्चीस से अधिक ग्रंथ एवं आठ सौ से अधिक आलेख एवं समीक्षाएँ प्रकाशित हुई हैं ।

डॉ. अनिल जूनवाल, संयोजक, राजभाषा संघर्ष समिति, उज्जैन

घनश्यामदास सराफ साहित्य पुरस्कार

सौ साल पुरानी संस्था मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से शनिवार 3 मई 2014 की शाम को दुर्गादेवी सराफ हाल, घनश्यामदास सराफ कॉलेज, मालाड (प), मुम्बई में आयोजित पुरस्कार समारोह में साहित्यकार देवमणि पाण्डेय (हिंदी), प्रकाश कुलकर्णी (मराठी), नीला संघवी (गुजराती) और कुमार महादेव व्यास (राजस्थानी) को 'घनश्यामदास सराफ साहित्य पुरस्कार' प्रदान किए गए। 'घनश्यामदास सराफ साहित्य पुरस्कार' प्रसिद्ध समाजसेवी श्री महावीरप्रसाद सराफ द्वारा अपने पिता श्री घनश्यामदास सराफ की स्मृति में स्थापित किया गया था। वरिष्ठ पत्रकार एवं नवनीत के संपादक विश्वनाथ सचदेव ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रसिद्ध उद्योगपति अशोक सराफ मुख्य अतिथि थे। संस्था अध्यक्ष श्रीकांत डालमिया ने रचनाकारों और अतिथियों का स्वागत किया। महामंत्री सुशील कुमार व्यास ने आभार व्यक्त किया। समारोह में मुम्बई महानगर के कई लेखक, पत्रकार और गणमान्य लोग उपस्थित थे।

साभार: सृजनगाथा डॉट कॉम

संपादक मंडल की ओर से

सूचनापत्र के इस अंक में आपके समक्ष संपादकीय टीम की ओर से दो महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

- विश्व हिंदी सचिवालय की वार्षिक पत्रिका से पाठक अवगत होंगे। विगत अंक सचिवालय के वेबसाइट पर भी उपलब्ध हैं। आगामी अंक में "रेडियो, टीवी व सूचना तथा मनोरंजन के अन्य माध्यमों द्वारा विदेशों में हिंदी प्रचार" पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। सचिवालय देश-विदेश में रेडियो/टीवी अधिकारियों से विशेष आलेखों के लिए संपर्क कर रहा है। सुधि पाठकगण भी अपने-अपने देश में इन माध्यमों से हिंदी प्रचार विषयक आलेख भेज सकते हैं। पत्रिका के उद्देश्यों से संबंधित अन्य विषयों पर आलेख का भी हार्दिक स्वागत है।
- 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन द्वारा सचिवालय को सौंपी गई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योजना के तहत सचिवालय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी शिक्षण से संबद्ध विश्वविद्यालयों, पाठशालाओं एवं शैक्षिक संस्थानों तथा हिंदी विद्वानों/लेखकों व हिंदी प्रचार-प्रसार से संबद्ध लोगों का डाटाबेस तैयार करने के कार्य में जुटा हुआ है। इस डाटाबेस के माध्यम से विश्व हिंदी समुदाय की यथोचित जानकारी आप तक पहुँचाना हमारा उद्देश्य है और इस कार्य में आपका सहयोग सचिवालय के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि विश्व हिंदी समाचार के पाठकों के माध्यम से दोनों योजनाओं के विषय में निम्नलिखित सूचनाओं का प्रचार होगा और योजनाओं में योगदान भी प्राप्त होगा।

आपके सहयोग के लिए अग्रिम धन्यवाद।

विश्व हिंदी सचिवालय

'विश्व हिंदी पत्रिका 2014' के लिए शोध लेख आमंत्रित

विश्व हिंदी सचिवालय अपनी वार्षिक पत्रिका के 6ठे अंक के लिए विश्व भर के हिंदी विद्वानों, साहित्यकारों व लेखकों की ओर से शोध आलेख आमंत्रित कर रहा है।

नियम व शर्तें:

❖ लेखों का शोधपरक होना अनिवार्य है। लेख "रेडियो, टीवी व सूचना तथा मनोरंजन के अन्य माध्यमों द्वारा विदेशों में हिंदी प्रचार" पर आधारित हो अथवा विषय ऐसे हों जो हिंदी के बढ़ते अंतरराष्ट्रीय वर्चस्व से परिचय कराते हों; चाहे वह शिक्षा, साहित्य, संस्था, आंदोलन अथवा योजना-विशेष, सूचना-प्रौद्योगिकी, संचार माध्यम व ज्ञान-विज्ञान के किसी भी क्षेत्र में हो।

❖ लेख लगभग 2500 शब्द संख्या का होना चाहिए।

❖ संपादक मंडल द्वारा लेख स्वीकृत होने की स्थिति में, मौलिक तथा अप्रकाशित लेखों के लिए विनम्र मानदेय होगा।

❖ लेखक का संक्षिप्त परिचय, पासपोर्ट आकार फ़ोटो एवं लेख के मौलिक तथा अप्रकाशित होने का प्रमाण पत्र भी साथ भेजने का अनुरोध है।

❖ लेख डाक अथवा ई-मेल द्वारा भेजा जा सकता है, अंतिम तिथि 30 सितंबर, 2014 होगी।

प्रधान संपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

संपादन सहयोग
सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी, श्रीमती विजया सरजु, श्रीमती उषा राम, श्री कैलाश दावराज़, श्री भेराम जयश्री

विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड 74427, मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side 74427, Mauritius
Phone: (230) 676 1196
Fax: (230) 676 1224
Email: info@vishwahindi.com
Website: www.vishwahindi.com
Printed by
BAHADOOR PRINTING LTD.
Avenue St. Vincent de Paul – Pailles
Tel: (230) 208 1317

विश्व हिंदी सचिवालय का डाटाबेस

9वें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्यों के कार्यान्वयन के लिए सचिवालय विश्व भर में

❖ **हिंदी शिक्षण से संबद्ध विश्वविद्यालयों, पाठशालाओं एवं शैक्षिक संस्थानों**

❖ **हिंदी विद्वानों/लेखकों व हिंदी प्रचार-प्रसार से संबद्ध लोगों**

का एक **डाटाबेस** तैयार कर रहा है।

विश्व भर के हिंदी विद्वान, साहित्यकार, संस्थाओं के प्रतिनिधि सचिवालय के डाटाबेस के लिए निम्नलिखित जानकारियाँ भेजने की कृपा करें:

हिंदी विद्वान/साहित्यकार/ हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबद्ध व्यक्ति		**संस्थाएँ (विश्वविद्यालय/पाठशाला/ सरकारी/गैर-सरकारी संस्थाएँ आदि)**	
जीवनवृत्त (बायोडाटा) <u>अथवा</u>			
1.	नाम	1.	संस्था का नाम
2.	पता	2.	पता
3.	फ़ोन/फ़ैक्स	3.	फ़ोन/फ़ैक्स
4.	ई-मेल	4.	ई-मेल
5.	शैक्षणिक उपाधियाँ	5.	इतिहास
6.	पद	6.	उद्देश्य
7.	संस्था	7.	आयोजन/गतिविधियाँ
8.	प्रकाशन	8.	प्रमुख पदाधिकारी
9.	ब्लॉग/वेबसाइट	9.	लोगो अथवा भवन का चित्र
10.	सम्मेलनों/कार्यशालाओं में प्रतिभागिता	10.	प्रकाशन
11.	सम्मान/पुरस्कार	11.	ब्लॉग/वेबसाइट
12.	एक पासपोर्ट आकार चित्र	12.	सम्मान/पुरस्कार
13.	अन्य प्रासंगिक जानकारियाँ	13.	अन्य प्रासंगिक जानकारियाँ

सभी जानकारियाँ डाक अथवा ई-मेल द्वारा भेजी जा सकती हैं।

अधिक जानकारी के लिए ई-मेल, फ़ोन अथवा फ़ैक्स द्वारा संपर्क करें।